सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 168

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
अक्टूबर – 2018

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों से,

आज श्री जगतगुरु साईनाथ महाराज जी का अमर दिन है तथा आज वंदनीय दादाजी द्वारा स्थापित किए हुए साईशक के तीन तप पूरे होकर श्री साईशक 37 का आरंभ हो रहा है और श्री साईनाथ महाराज जी को समाधि लिए सौ साल पूरे हो गए। आज का शुभ दिन हम सभी के लिए महत्वपूर्ण है। पिछले तीन तप यानी साई शक के 36 साल और उससे पहले वंदनीय दादाजी के इस जन्म के 25–30 साल से हम गुरुभक्त इस कार्य पद्धति का लाभ ले रहे है। इस कार्य का लाभ लेते समय हमारी ईश्वर के प्रति भूख बढ़ रही है या विषयों के प्रति भूख बढ़ रही है यह विचार आज हमें करना जरूरी है। आज इस कार्य का अनुभव लेकर हमारे ईश्वर के प्रति निष्ठा कितनी दृढ़ हुई है? ईश्वर या गुरु तत्व आज हमें प्राप्त क्यों नहीं हो रहा है? क्या इस प्रकार के विचारों से हम परेशान है?या आज भी हम अपने दुखों के बारे में सोच कर सिर्फ कामकाज का लाभ लेना चाहते है?

जब हम पहली दफा यहाँ (इस कार्यकेंद्र पर) आए थे तब श्री गुरुस्थान से हमें निराकरण दिया गया जिससे हमारे दुख कम होकर हमें सुख, शांति, समाधान का लाभ प्राप्त हुआ। यह लाभ देने के पीछे इस कार्य पद्धति की क्या भूमिका है?हम सोचते है कि दुखी परिवार को सुख प्राप्त करा देना यही गुरुकार्य है। लेकिन यह गुरु कार्य का एक छोटा सा भाग है तो असली मतलब में गुरुकार्य क्या है उसका विचार आज हम करते है।

पिछले कुछ सैंकड़ों वर्षों से मानवों की जीवन पद्धति बदल गई है। जीवन में ईश्वर का महत्व कम हो गया है और ईश्वर

उपासना यह सुख प्राप्ति का माध्यम है यही सोच दृढ़ हो रही है। इस जगत में आज ईश्वर है या नहीं यह विवाद चल रहा है। कुछ लोग कहते है 'ईश्वर है' कुछ कहते हैं 'नहीं है' और कुछ कहते हैं 'पता नहीं है' जो लोग, 'ईश्वर नहीं है' ऐसा मानते है या जिनको 'पता नहीं' उनको विश्वास रखने के लिए प्रचिती (अनुभव) चाहिए।

हम जब कार्य केंद्र पर अपना दुख निवारण करने के लिए आए तब हमें कृपाशीर्वाद की प्रचीती दी गई। जो सुख–शांति–समाधान मानवी प्रयत्नों से नहीं प्राप्त हुआ वह कुछ ही हफ्तों में हमें प्राप्त होने लगा। यह गुरु शक्ति कार्यान्वित की हमारा आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए। हमें यह समझ आ गई कि गुरु के कृपाशीर्वाद से दुखों का निरसन–निराकरण हो सकता है। अब यह आत्मविश्वास प्राप्त होने के बाद हमें सोचना चाहिए कि इस जन्म में श्री गुरु से हमें किसकी प्राप्ति करनी है लेकिन जब हमने यह समझा कि कोई भी कष्ट करे बगैर यहाँ हमारे दुख आसानी से दूर हो रहे है, तब हम लोभी बन गए। आज भी सबसे ज्यादा भीड़ कामकाज के लिए होती है। लेकिन प.पू. बाबा हेतू हमें हमारी अपेक्षा के परे सुख प्राप्त कर देना यही नहीं है। तो उनका उदात्त हेतू क्या है?

आज हमें जो दृष्टि प्राप्त हुई है उससे हम आस–पास क्या देखते है?आज हमें जगत की परिस्थिति किस प्रकार की नजर आती है? तो भयंकर परिस्थिति हो रही है। पदसिंजपवद हर वक्त बढ़ रहा है। पैसे पूरे नहीं पड़ते, धान्य (अनाज) कम हो गया, पानी भी पूरा नहीं मिलता, महंगाई बढ़ रही है। भौतिक अवस्था में मानवीय जीवन भीषण परिस्थिति में जा रहा है। यह देख कर अर्थ शास्त्रज्ञ, भौतिक वादी, अन्य कई शास्त्रज्ञ अपने हिसाब से सुधार करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उसी प्रकार अवतारी परंपरा में जो सत्पुरूष है, वे भी इस जगत के शास्त्रज्ञ है और अपना–अपना कार्य कर वे भी इस आने वाली भीषण परिस्थिति को बदलने का प्रयत्न करते है। वं. दादाजी का यह कार्य उसी का एक महत्वपूर्ण भाग है।

हमारा इस महान कार्य में क्या कर्त्तव्य है, यह समझने के लिए हमें जीवन उत्पत्ति के बारे में समझना होगा।

यह जन्म प्राप्त होने से पहले हमारी अवस्था अपने अपने कर्म के हिसाब से परलोक में थी। आज इहलोक में हम जो जो व्यक्ति जन्म प्राप्त करते है, वे अपने कर्म के हिसाब से आए है। अपने कर्म के अनुसार हमें कर्त्तव्य कर इस जगत से चले जाना है लेकिन जाते समय हमें आज की अवस्था से उच्च अवस्था में जाने के लिए इस जगत से जाना है। ना कि आज से क्षुद्र अवस्था में जाना है। लेकिन क्या हम उसके प्रति कोई प्रयत्न कर रहे है?वं. दादाजी ने पहले सम्मेलन में कहा था कि जन्म तीन प्रकार से प्राप्त होते है, कर्मपरत्वे, कार्यपरत्वे और कारणपरत्वे। पहले प्रकार में यानी कर्मपरत्वे जन्म में दो प्रकार हैं : वासनापरत्वे एवं इच्छापरत्वे। जिस तरह हर एक व्यक्ति को जन्म प्राप्ति अलग प्रकार में अलग कर्म के हिसाब से हुई है, तो सबका जीवन समान होना मुमकिन नहीं है। आज हम और समाज का हर एक व्यक्ति एक दूसरे के जीवन से स्पर्धा कर रहे है। सर्व सामान्य व्यक्ति से असामान्य व्यक्ति तक हमें खुद को अपने कर्म के हिसाब से जो सुख प्राप्त हो रहा है वह छोड़कर, अन्य लोगों को हमसे क्या ज्यादा प्राप्त हुआ है और वह हमें किस प्रकार प्राप्त हो, इस विचार में, उस प्रयत्न में जीवन व्यतीत कर रहे है। आज हमारे जीवन में औरों का सुख देख कर जो इच्छा वासना निर्माण हो रही है उसके वजह से खुद को प्राप्त हुआ सुख हम अनुभव नहीं कर सकते और अधिक सुखों की अपेक्षा में जब हम यह जीवन छोड़कर चले जाऐंगे तब इस इच्छा वासना के वलय हमारे आत्मा के सभोवार प्रखर हो जाएंगे। क्योंकि प्राप्त पैसा, बड़ा मकान, आदि सुखों की अभिलाषा करते रहे। ऐसी

इच्छा–वासना के वलय पीछे रहने की वजह से उस आत्मा को जबरदस्ती अगला जन्म प्राप्त होता है। उसी के साथ जो व्यक्ति समाधानी होकर प्राप्त जीवन में अपने कर्त्तव्य करके इस जीवन से गुजर जाता है, वह आत्मा सोचता है कि प्राप्त जीवन में जन्म का सार्थक करने का जो मौका मिला था, वह ज्ञान–अज्ञान से गंवा दिया। अब योग्य प्रकार से अगला जन्म प्राप्त कर सिर्फ सुख, शांति, समाधान के पीछे न जाते हुए, ईश्वर की उपासना कर अपनी कर्म की अवस्था सुधारनी है और जीवन का सार्थक करना है।

अब ऐसे समय एक आत्मा को उसके कर्म, ईच्छा वासना ने जबरदस्ती जन्म प्राप्त करा दिया और दूसरी अवस्था का आत्मा जीवन का सार्थक करने के लिए जन्म को आया। इन दोनों के जीवन में क्या फर्क होगा? पहली अवस्था में वह व्यक्ति स्वाभाविकतः अन्य लोगों को जो सुख प्राप्त हुआ है उसके पीछे भागेगा। लेकिन उसके आत्मा को उसके पहले जन्म का भी ज्ञान है और इसके लिए सुखी होने के प्रयत्न में वह आत्मा देह को सहाय्य (मदद) नहीं करता। उसे पता है कि सुखों के लिए कर्म खर्च हो जाएगा फिर वह खुद के उद्धार के लिए कुछ नहीं कर पायेगा। उस व्यक्ति को कितने प्रयत्न करके भी यश प्राप्ति नहीं होती। तब वह सोचने लगता है कि उसने पहले जन्म में क्या पाप किया था? उसी वक्त जो दूसरी अवस्था में आत्मा जन्म को आया है, उसे सभी जगह यश प्राप्ति होती है। क्योंकि उस आत्मा को अपने ऋणानुबंधकी/कर्मकी कर्त्तव्य पूर्तता करके खुद का सार्थक करना है।

हम जीवन में आस–पास देखते है कि कुछ लोगों को सुख बहुत ज्यादा, प्रमाण से परे प्राप्त हो रहा है और कई लोगों को सुखों की बहुत जरूरत है। अब हम अगर अपने जीवन की तुलना एक–दूसरे से करते रहे तो कोई भी निर्णय मिलना मुमकिन नहीं है। जीवन में जो स्पर्धा चल रही है उसमें एक व्यक्ति कोई व्यापार करके करोड़पति होता है और उसे देख अन्य व्यक्ति वही व्यापार करके सब पैसा खो देता है। अब दूसरा व्यक्ति गुरुमार्गी होकर यह कहता है कि अभी तक गुरु की कृपा उस पर नहीं हुई है। लेकिन हम गुरु से क्या अपेक्षा कर रहे है?दूसरों जैसा सुख हमें प्राप्त हो? हमें यह सोचना और समझना जरूरी है की कर्मपरत्वे हर एक व्यक्ति की जन्म उत्पत्ति की अवस्था अलग–अलग होती है। उसी के अनुसार हर एक को प्राप्त हुआ सुख अलग अलग होगा। कर्मपरत्वे एक व्यक्ति को मिलने वाला सुख दूसरे को नहीं और दूसरे का सुख तीसरे को नहीं। फिर गुरुमार्ग में क्या प्राप्त होता है, तो भले ही हम सबके कर्मकी अवस्था अलग अलग है लेकिन पारमार्थिक अवस्था देते समय श्री गुरु हममें भेदभाव नहीं करते। सभी को समान अवस्था प्रदान करते है। सभी विमोचन एवं दीक्षाऐं सभी गुरुभक्तों को एवं जगत के अन्य लोगों को समान रूप में प्रदान की हैं। जो जितना धारण करेगा, उसका विकास जल्दी होगा। उसी के साथ श्री गुरु ने अभिवचन दिया है कि सभी के जीवन की प्राथमिक जरूरत तो पूरी करेंगे। किसी के कर्म में तरतूद नहीं होने के बावजूद भी उसका ख्याल रखेंगे और प्राप्त हुए सुखों में समाधान का अनुभव देंगे।

कर्मपरत्वे जीवन व्यतीत करने के लिए सभी को अलग–अलग प्रकार से जीना पड़ता है लेकिन गुरुमार्ग के लिए जीते समय एक ही प्रकार का जीवन है। 'गुरुमार्ग' यानी अपना–अपना प्रापंचिक कर्त्तव्य करते समय गुरु ने जो सिखालाई दी है उसके अनुसार जीवन का मार्ग अनुसरण।

बाह्य जगत में किसे कितना सुख मिलता है, यह सोचना हमारा काम नहीं है। जीवन में जो स्पर्धा चल रही है, उसकी वजह से जीवन की सार्थकता करने का मौका मिलने के बाद भी कई लोगों ने वह मौका गंवा दिया है। आपको प्राप्त हुआ यह मौका आपसे छूटना नहीं चाहिए। आज प्राप्त जन्म कर्त्तव्यपरत्वे व्यतीत कर हमें अगली उच्च अवस्था में जाना है। लेकिन वहाँ जाने के लिए इस प्राप्त

जन्म में कुछ तरतूद करनी जरूरी है। यानी हमारे जीवन का एक भाग गुरुकार्य के लिए हमें देना है। हर रोज की ॐकार साधना करके और हमारे आचार, उच्चार, विचारों पर संयम करके हमें अपना कर्त्तव्य करना है।

परम पूज्य बाबा और वंदनीय दादाजी, पारमार्थिक अवस्था के महान शास्त्रज्ञ हैं। मानवीय जीवन का सखोल अभ्यास करके, दुखों का अध्यन कर विमोचन की सिद्धता करके, जन्म के उद्धार के लिए दीक्षाऐं सिद्ध कर, सब साधन सिद्धता शक्तिपीठ एवं प्रतिमाओं के द्वारा ॐकार साधना, आरती साधना और मुलाकात साधना के माध्यम से गुरुशक्ति कार्यान्वित कर रखी है।

मानवीय जीवन के सहायक के लिए ईश्वरी शक्ति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वह ईश्वरी शक्ति की उपस्थिति पूरे ब्रह्मांड में है। लेकिन उसे मानवीय जीवन के उद्धार के प्रति काम में लाने के लिए, कार्यान्वित करना जरूरी होता है। उसके लिए माध्यमों की आवश्यकता लगती है। जिस तरह अणु शास्त्र में (atomic science) में अणु का विघटन करने पर प्रचंड शक्ति का निर्माण होता है, लेकिन वह अणु को विघटन करने के लिए भी कोई एक शक्ति की जरूरत होती है। उसी प्रकार मानवीय जीवन को योग्य दिशा प्राप्त होने के लिए मानवों को खुद के जीवन का बोध होने के लिए ईश्वरी शक्ति कार्यान्वित होने की जरूरत होती है। इस ईश्वरी शक्ति को कार्यान्वित करने के लिए जो बाह्य शक्ति लगती है, वह परम पूज्य बाबा और वंदनीय दादाजी ने सिद्ध की हुई यह गुरु शक्ति है। वह गुरुशक्ति कार्यान्वित होने के लिए हम सभी गुरुभक्तों को अपना–अपना कर्त्तव्य निभाना है, यानी काया, वाचा, मन से ॐकार साधना करना और हमारे दिन भर के आचार, उच्चार और विचार परमार्थ प्रश्नावली में बताए अनुसार रखना।

आज के शुभ अवसर पर साई शके 37 का आरंभ करते समय हम सभी को यह निश्चय करना है।

आप सभी को साई शक 37 की शुभकानाऐं।

।। शुभं भवतु।।

जनम जनम का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible